ओ माँ के
आँगन के गुलाब

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

ओ माँ के
आँगन के गुलाब

सुषमा शर्मा

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

ओ माँ के आँगन के गुलाब

संस्करण : 2021
© सुषमा शर्मा
ISBN: 978-93-90870-89-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE COPY


नमन
माँ तेरे चरणों में

SAMPLE

प्रिय पाठकगण,

मैंने कभी कुछ विशेष करने की नहीं सोची। जीवन की सीढ़ियां चढ़ते उतरते न जाने कब ये अहसास हुआ कि मैं भी कुछ लिखूं। अपने बाद याद करने के लिए कुछ अच्छा बुरा होना चाहिए।

अपनी माँ के पास से बहुत कुछ लाई, बहुत कुछ सीखा। उस अनजाने से समय में निहारते निहारते न जाने कब ये विचार आ गया, पता ही नहीं चला। माँ के आँगन से गुलाब के पौधे की एक छड़ी लाई थी। उसे बहुत सी जगह रोप दिया और ये रचना बन गयी, जो आपके सामने प्रस्तुत है।

मैं काव्य में सीमा बन्धन को न जानती हूँ न मानती हूँ। हर पद अपने में स्वतंत्र है। बस जीवन ने जैसा अनुभव दिया, आपके समक्ष प्रस्तुत है ----------

सुषमा शर्मा

नमूना SAMPLE

SAMPLE

1.

ओ माँ के आँगन के गुलाब
तेरी पीड़ा है बेहिसाब
माँ के घर से जब आई थी
मैं एक छड़ी भी लाई थी
थी वो टहनी भी डरी डरी
कुछ मैं भी थी सहमी सहमी
माटी ने रूप निखार दिया
जल वायु सूर्य ने प्यार दिया
डाली से पौधा बना दिया
अब तो घर आया था गुलाब
ओ माँ के आँगन के गुलाब
तेरी पीड़ा है बेहिसाब

नमूना SAMPLE

2.

तू मुस्काया, मैं भी खुश हूँ
तू हंसा आज मैं भी हंस दी
तेरे यौवन की मस्ती ने
मेरी खाली झोली भर दी
मैंने कितने सपने देखे
पतझर देखा, कांटे देखे
मन अन्तर के कितने सारे
मेरे बसन्त तूने बांटे
कुछ अच्छे थे कुछ थे खराब
ओ माँ के आँगन के गुलाब
तेरी पीड़ा है बेहिसाब

SAMPLE

3.

मैंने जो बाग लगाया था
वो होली पर लहराया था
उसकी भी खुशबू फैल गयी
कुछ इधर गयी कुछ उधर गयी
तेरी पंखुरी पंखुरी जोड़ी
बिटिया को दूँ गुलकन्द बना
तेरी खुशबू से सराबोर
घर आँगन का कोना कोना
है तुझसे हम सबका लगाव
ओ माँ के आँगन के गुलाब
तेरी पीड़ा है बेहिसाब

नमूना SAMPLE

4.

जब कलियां फूट फूट निखरीं
यूं लाल गुलाबी थे गुलाब
मैं चुन चुन उनको थकी थकी
अनगिन अनन्त फैले गुलाब
सारे घर में खुशबू फैली
हैं यहां गुलाब, हैं वहां गुलाब
भारत जनमानस सम गुलाब
घिर कांटों में हंसता गुलाब
ओ माँ के आँगन के गुलाब
तेरी पीड़ा है बेहिसाब

SAMPLE